Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
11
2019
VOL. 170

Founder's Essay

ठोस चट्टान की तरह मानसिक संतुलन

जब मैं टोक्यो में तुरंत पहुँचा ही था, उसी समय एक सड़क मेले में एक ज्योतिषी ने मुझसे कहा ,"आप एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो बिना किसी उत्तेजक भाव के अच्छे नहीं लगते हैं।" उसके बाद से, जब भी मैं किसी मुश्किल में पड़ा, मैं स्वयं से कहा, "आखिरकार चीजें दिलचस्प होने वाली हैं!"

सामान्य समय में, जब चीजें सुचारु रूप से चल रही हैं, आप जिस तरह काम कर रहे हैं उसमें बड़ा बदलाव लाना संभव है, परन्तु उसे कार्य रूप देना फिर भी बहुत कठिन है। लेकिन जब कोई कठिनाई आपको किसी ऊँची चट्टान के किनारे पर ला खड़ा करती है, तब आप बदलाव लाने से भाग नहीं सकते हैं।

कार्यस्थल में भी यही लागू होता है। एक संगठन में जहाँ सारे कार्य कठोर नियमानुसार चलते हैं, वहाँ सभी प्रकार की बाधायें आती हैं जो चीजों को करने के तरीकों में बदलाव को बेहद मुश्किल बनाती हैं, जबकि वहाँ सभी जानते हैं कि इस तरीके को जारी नहीं रखा जा सकता है। कुछ भी हो, आर्थिक मंदी का दौर ही सम्पूर्ण सुधार का अच्छा अवसर प्रदान करता है। हर कोई एकजुट होकर एक साथ मिलकर काम में लीन हो जाता है, यह जानकर कि होनेवाली कठिनाइयों को दूर करना होगा। यह पुण्डरीक सूत्र का दृष्टिकोण है, जो दर्शाता है कि देवदत्त, बुद्ध का जानी दुश्मन, भी कभी अच्छा आध्यात्मिक मित्र था।

यदि आप किसी संकट को सुअवसर में बदलना सीख सकते हैं, फिर आपके पास डरने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा। चाहे स्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल, आप चट्टान की तरह अडिग भाव से स्वयं से कहेंगे, "चीजें आखिरकार दिलचस्प होने वाली हैं!"

निक्क्यो निवानो, काइसो ज़ुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 182 - 183

Living the Lotus
Vol. 170 (November 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

प्रोत्साहन एवं परिश्रम

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

बुद्ध से प्रोत्साहन मिलना

श्रद्धा विश्वास के लोक में, हम प्रायः कहते हैं "देवताओं एवं बुद्धों द्वारा मिली मुक्ति।" बौद्ध वाङ्मय में, यद्यपि हम कहते हैं कि "बुद्ध हमारा उद्धार करेंगे," इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सिर्फ "मुक्ति" मिलने की प्रतीक्षा में ही रहें।

पुण्डरीक सूत्र के सातवें परिवर्त ("मायावी नगरी का दृष्टांत") से उद्धृत वाक्यांश, "बुद्ध जीवित प्राणियों को बाध्य कर सकते हैं / त्रिविध लोक के नरक से निकल आने के लिए।" यहाँ, "बाध्य करने" का अर्थ है प्रतिपादित करना या प्रोत्साहित करना। संस्थापक निवानो ने सूत्र के इन पंक्तियों की व्याख्या इस तरह की है: "बुद्ध हमें इस संसार के कष्टों और चिन्ताओं (नर्क) से बिना शर्त मुक्ति नहीं दिलाते हैं। बल्कि वे हमारे लिए सत्य को प्रकाशित करते हैं और हमें देशनाओं के माध्यम से इसे समझने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे कि हम इस तरह दुःख संताप के स्थान से अपने आप को मुक्त करें।" संस्थापक ने स्पष्ट कहा है कि "हमें स्वयं देशना के माध्यम से अपने प्रयासों द्वारा स्वयं को दुःख संताप से मुक्त रखना है।"

चूँकि हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य के रूप में बुद्ध की देशना से जुड़े हैं और इसलिए पूर्व से ही प्राप्त किया है-और इन देशनाओं के माध्यम से बुद्ध से सदा प्रोत्साहन प्राप्त कर रहे हैं, हम दृढ़ता से स्वयं के अभ्यास के महत्व को समझते हैं, जिसके द्वारा हम अपने दुःख संताप से मुक्त हो जाते हैं।

वैसे, क्या आप ऊपर उद्धरित "मायावी नगर का दृष्टांत" की अंतिम पंक्तियों को पहचानते हैं? यह पंक्तियाँ "गुणों के परिवर्त के सिद्धांत" के रूप में जानी जाती हैं: "ये गुण समस्त प्राणियों तक पहुँचें, जिससे कि हम सभी जीवित प्राणी, एक साथ मिलकर बुद्धमार्ग को प्राप्त कर सकें।"

ये पंक्तियाँ, जो हमारी इच्छाओं को व्यक्त करती हैं कि हम सभी अपने गुणों का प्रसाद दूसरों तक पहुँचाकर बुद्ध के स्तर तक पहुँच सकते हैं, यद्यपि यह अनुभव हो सकता है कि ऐसा करना कठिन है। यदि हम उन्हें अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़ते हैं तो हमारी इच्छायें परिश्रम के रूप में उभरती हैं जो आश्चर्यजनक रूप से हमारे करीब और परिचित हैं।

मैं इस वाक्यांश की इस प्रकार व्याख्या करता हूँ: "परिवार के सदस्यों से लेकर मित्रों तक, जो कोई भी हमारे संपर्क में आता है हम उनके प्रति सदा दयालु रहें। अपने सुबह और शाम के सस्वर पाठों के माध्यम से, हमें अपनी मानसिक स्थिति और कार्यों का पुनः परीक्षण करना चाहिए। ऐसा करके, हम अनेक लोगों के साथ अच्छे कार्मिक संबंध बना सकते हैं, अच्छे मित्र बनाकर और उनके साथ मिलकर, सच्ची खुशी का अनुभव कर सकते हैं।"

जब हम बुद्ध से प्रोत्साहन प्राप्त करने और देशना के अभ्यास के लिए "स्वयं प्रयास करने" का क्या अर्थ है, के बारे में विषय विचार करते हैं तो परिश्रम का यह परिचित रूप मन में आता है, जैसा कि ऊपर उद्धृत उद्धरण में वर्णित हमारी इच्छाओं में स्थापित है।

ध्यान से जीना

अच्छे मित्रों की बातों के प्रसंग में, एक प्रसिद्ध कथा है जिसमें बुद्ध के शिष्यों में से एक पूछता है, "क्या अच्छे मित्र और अच्छे संगी का होना बुद्ध मार्ग का अर्ध भाग है?" और शाक्य मुनि उत्तर देते हैं, "वास्तव में, यह सम्पूर्ण बुद्ध मार्ग है।" कुछ दिनों बाद, शाक्यमुनि ने कोसल के राजा प्रसेनजित को दी अपनी सलाह में इस प्रश्नोत्तर के विनिमय का उल्लेख करते हैं।

शाक्यमुनि कहते हैं, "राजा प्रसेनजित, आपको लोगों का अच्छा मित्र एवं साथी बनना चाहिए और अच्छे कार्य करके उनका नेतृत्व करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से, आपके अच्छे प्रयासों के बारे में देखने और सुनने वाले सोचेंगे कि उन्हें खुद बेपरवाह नहीं होना चाहिए और उन्हें भी प्रयास करना चाहिए, इससे कहीं ज्यादा यदि आप उन्हें फटकार लगाकर या शिक्षा देकर प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।"

यह हमारे लिए भी अच्छी सलाह है। जब माता पिता अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि वे खुश रहें, माता पिता की अपनी हार्दिक इच्छा होती है कि वे स्वयं किस तरह का मानव प्राणी बनना चाहते हैं - यह महत्वपूर्ण है जो शाक्यमुनि द्वारा राजा प्रसेनजित को दिये सलाह में भी झलकता है। तब, यदि हम पूछें कि "अच्छे कार्य करने का प्रयास" का क्या अर्थ है, यह जटिल नहीं है और मान लें कि अपने दैनिक जीवन में हम आदतन ऐसा कर रहे हैं। इसका अर्थ जीवन का प्रत्येक दिन ध्यानपूर्वक जीना है।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं, जहाँ भी आप अभी हैं वह बुद्ध मार्ग का अभ्यास करने का एक स्थान है। इसलिए, जिन्हें हम अक्सर महत्व नहीं देते उन चीजों के प्रति आभार प्रकट करना जारी रखें, आप अपने चरित्र को निखार सकते हैं और आसपास के लोगों के साथ खुशी का अनुभव कर सकते हैं। यह परिश्रम है, और "बुद्ध मार्ग को एक साथ पूरा करने" का यही अर्थ है।

हालाँकि, हम कभी कभी मानसिक शिथिलता को जन्म देते हैं और हम वह नहीं कर पाते जो सामान्यतः करते हैं। ऐसे समय में, हमारी आशा और इच्छा हमें जीवित रखती है। सबसे अच्छी बात यह है कि बिना शीघ्रता किये, अपने आपको पुनः आगे बढ़ाना आरंभ करें, किसी ऐसे व्यक्ति की तरह जिसे हम आदर्श रूप में देखते हैं उसकी तरह बनने के लक्ष्य की ओर - बुद्ध, जो सभी लोगों के लिये वास्तविक सुख चाहते हैं - और उस तरह का इंसान बनना चाहते हैं जो लोगों का अच्छा मित्र हो।

कोसेइ से, नवम्बर 2019

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
स्तूपसंदर्शन परिवर्त अध्याय 11: रत्न जड़ित स्तूप का उदय (2)

इस परिवर्त के प्रथमार्ध में रत्न जड़ित स्तूप पृथ्वी से निकल आप और उसके भीतर से एक ऊँची आवाज गूंज उठी। शाक्यमुनि ने महापरिषद के जनों को बताया कि तथागत प्रभूतरत्न बुद्ध उसमें विराजमान है।

बोधिसत्व महाप्रतिभान ने महापरिषद की ओर से पूछा, क्या वे तथागत प्रभूतरत्न के शरीर को देख सकते हैं। शाक्यमुनि सम्बोधित कर कहा: तथागत प्रभूतरत्न ने एक व्रत लिया था कि "यदि बुद्ध, जो पुण्डरीक सूत्र की विवेचना करते हैं।" मुझे सशरीर प्रदर्शित करना चाहते हैं, प्रथम वे अपने उद्भूत बुद्धों को एक स्थान पर बुलाये, जो पुण्डरीक सूत्र का लोक की दसों दिशाओं में सर्वत्र उद्घोष कर रहें हैं।

बोधिसत्व महाप्रतिभान ने महापरिषद की ओर से बोलते हुए पुछा, क्या आप सब तथागत महाप्रभूतरत्न को देख सकते हैं। शाक्य मुनि ने संबोधित कर कहा - "तथागत प्रभूतरत्न ने एक व्रत लिया था कि बुद्ध जो सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का उपदेश करते हैं और महापरिषद के समक्ष मुझे सशरीर प्रकट करेंगे, यदि वे सकल बुद्धों को एक स्थान पर एकत्र करते हैं जो दसों दिशाओं के लोकों में धर्मोपदेश कर रहें हैं।"

दसों दिशाओं में उद्भूत बुद्धों का एकत्र होना

इस प्रश्न पर बोधिसत्व महाप्रतिभान ने महापरिषद की ओर से प्रश्न किया: क्या वे उन बुद्धों को देख सकते हैं, शाक्यमुनि ने एक स्थान पर बुलाने के लिए सम्पूर्ण लोक को दसों दिशाओं को आलोकित किया। इससे स्पष्ट हो गया कि शाक्यमुनि का सहालोक समेत सम्पूर्ण लोक शाक्यमुनि से उद्भूत बुद्धों से परिपूर्ण हैं। जब सभी एक स्थान पर एकत्र हो गये, शाक्यमुनि बुद्ध आकाश में ऊपर उठे और रत्नजड़ित स्तूप के समक्ष विश्राम निमित्त आ गए।

परमार्थत्य कैसे काम करता है

शाक्यमुनि बुद्ध ने ज्ञान का प्रतीक अपने दाहिने हाथ को फैलाया और स्तूप के पट को खोलकर तथागत प्रभूतरत्न के गतिशून्य शरीर को समाधिस्थ रूप में दिखलाया।

तथागत ने कहा: उत्कृष्ट! उत्कृष्ट! शाक्यमुनि बुद्ध पुण्डरीक सूत्र

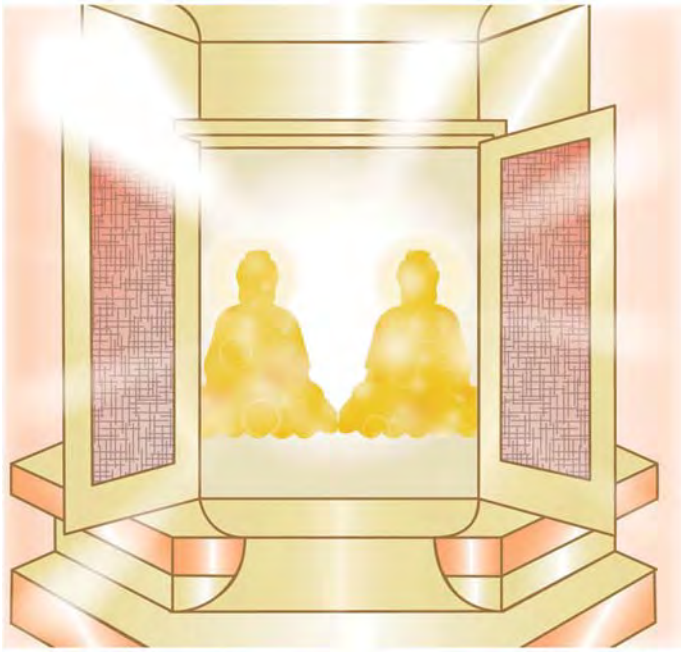

की प्रसन्नता पूर्वक उपदेश करने वाले हैं।

यहाँ कुछ बहुत महत्वपूर्ण प्रतीक है। तथागत प्रभूतरत्न सत्य का परमार्थ स्वरूप के नाते पूरी तरह अभी भी युक्ति संगत हैं। यह दर्शाता है कि परमार्थ सत्य शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय है। परन्तु, जो गतिशून्य है उसमें हमारे जीवन में परिवर्तन लाने की शक्ति नहीं है। जब कोई इसकी केवल इस रूप में व्याख्या करता है जिससे हृदय एवं मन प्रवित होता है, तो क्या यह लोक में मानव प्राणियों को मुक्त कराने में सक्षम नहीं है यही कारण है कि तथागत प्रभूतरत्न जो परमार्थ सत्य है। शाक्यमुनि की प्रशंसा करते हैं क्योंकि उन्होंने ही सत्य को प्रकाश में लाया है।

इस प्रकार तथागत प्रभूतरत्न आशा के प्रतीक है कि परमार्थ सत्य स्वयं अवश्य प्रकाश में आयेगा, व्यापक होगा, उसमें गति आयेगी और दैनिक जीवन के प्रयोग में आयेगा। हैं

दोनों बुद्ध एक सिंहासन पर विराजमान

जैसे जैसे परिवर्त की कथा बढ़ती है, तथागत प्रभूतरत्न बुद्ध सिंहासन के मध्य में बैठे हुए कुछ खिसक जाते हैं और दूसरे अर्ध भाग को शाक्यमुनि को अर्पित करते हैं। वे स्तूप में प्रवेश कर जाते हैं और साथ बैठ जाते हैं।

यह संक्षिप्त कार्य दो महत्वपूर्ण चीजें दिखलाता है। प्रथम यह अनेक लोगों की गलत धारणा को खण्डित करता है कि तथागत शाक्यमुनि मात्र नश्वर शरीर के बुद्ध नहीं हैं, बल्कि तथागत प्रभूतरत्न के समान अनश्वर है, जो स्वेच्छा से अवतरित होते हैं और परिनिर्वाण में प्रवेश कर जाते हैं। सामान्य जन्ममरण का नियम के अधीन नहीं है। परिवर्त - 16 में इसे स्पष्ट किया गया है, यहाँ मात्र संक्षेप में उल्लेख है।

दूसरा, बुद्ध का धर्मकाय (तथागत प्रभूतरत्न के रूप में) दर्शाया गया है और बुद्ध के दृष्ट शरीर (जिसमें शाक्यमुनि बुद्ध अवतरित होते हैं) को इस रूप में दिखलाया गया है। वे दोनों एक समान हैं उनमें कौन श्रेष्ठ है का अन्तर नहीं है। इसलिए परमार्थ सत्य (स्वयं में पूर्ण तथा एकीकृत सत्य का स्वरूप है) और सत्य के विवेचक के रूप

बुद्ध का सद्धर्म शाश्वत रहेगा

एक जगह एकत्र हेतु समस्त लोग आकाश में सिंहासन पर आसीन दोनों तथागतों को तैरते देखते हैं, तो वे बुद्धों को दूर से ऊँचतर एवं दूर समझने लगते हैं और उनकी इच्छा होती है कि वे भी आकाश में एकत्र हो जायें।

शाक्यमुनि बुद्ध उनकी इच्छा को समझने के उपरांत, उनको ऊपर उठाते हुए कहते हैं: इस महा परिषद में कहता हूँ कि जो मेरे परिनिर्वाण के उपरान्त इस सूत्र का संरक्षण करते, धारण करते पढ़ते तथा पाठ करते हैं, उन्हें बुद्ध के समक्ष व्रत लेकर स्वयं को समर्पित करना चाहिए। यद्यपि, बुद्ध चिर परिनिवुत हैं, बुद्ध प्रभूतरत्न महागंभीर स्वर में सिंह गरजन करते हैं। तुम सभी को जानना चाहिए कि क्यों तथागत प्रभूतरत्न, मैं स्वयं एवं सभी बुद्ध यहाँ एकत्रित हुए हैं, कोई बुद्ध पुत्र जो इस देशना को संरक्षण देने में समर्थ हैं, उसे अवश्य व्रत लेना चाहिए, जिससे यह देशना चिर स्थायी रहे। जो इस सूत्र को संरक्षण में समर्थ हैं, उन्होंने मुझे एवं प्रभूतरत्न को श्रद्धांजलि अर्पित की है।

शाक्यमुनि के इस संबोधन को "बुद्ध का सद्धर्म शाश्वत रहेगा" कहा जाता है।

बुद्ध का सद्धर्म शाश्वत रहेगा

इस प्रकार, शाक्यमुनि ने महापरिषद में उपस्थित जनों को संबोधित कर पुण्डरीक सूत्र के प्रचार प्रसार के प्रयास के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही, बताते हैं कि उनके परिनिर्वाण के उपरान्त, पुण्डरीक सूत्र को प्रकाश में लाना कठिन होगा और इससे अर्जित पुण्य और भी अधिक गंभीर होगा।

तदुपरांत, शाक्यमुनि ने अपने परिनिर्वाण के उपरान्त पुण्डरीक सूत्र की विवेचना की कठिनाइयों की व्याख्या की। ये छह कठिनाइयाँ हैं ---

1 सूत्र के उपदेश में कठिनाई
2 प्रतिलिपि बनाने तथा धारण करने की कठिनाई
3 एक पल भी सूत्र को पढ़ने की कठिनाई
4 धैर्य की विवेचना की कठिनाई
5 सूत्र को सुनने एवं स्वीकारने की कठिनाई
6 सूत्र को सादर धारण करने की कठिनाई

ये छह कठिनाइयाँ हैं। इनके साथ ही, शाक्यमुनि ने इस खण्ड में नौ आसान अभ्यासों पर प्रकाश डाला है।

दसों दिशाओं में उद्भूत बुद्धों का एकत्र होना

यहाँ तक महापरिषद गृधकूट पर्वत के शिखर पर हुई थी। यहाँ से 22 वाँ परिवर्त अनुपरीन्दना परिवर्त के अन्त तक आकाश में आयोजित हुई थी। पुनः इसके बाद गृधकूट पर्वत के शिखर पर आयोजित हुई। क्योंकि पुण्डरीक सूत्र का महापरिषद दो स्थानों पर तीन बार आयोजित हुई थी, इसलिए इसे "दो स्थान एवं तीन महापरिषद" कहा जाता है।

इसमें एक गहरा महत्व छिपा है। गृधकूट पर्वत का शिखर हमारे वास्तविक जीवन को इंगित करता है जबकि आकाश हमारे आदर्श स्थिति का प्रतीक है। जब हम नया सीखते हैं, तो हमें जो पहले से जानते है उससे प्रारंभ करना चाहिए, जिससे कि समझने में कोई गलती या कठिनाई नहीं हो। यही कारण है कि बुद्ध सदा वास्तविक समस्याओं की व्याख्या से करते हैं जैसे कि भ्रम को कैसे दूर किया जाय, कैसे मानव प्राणियों को दुः ख संताप से मुक्त कराया जाय।

यहाँ तक स्वयं को पुण्डरीक सूत्र तक सीमित करते हुए, देखते हैं कि प्रारंभ से ही बुद्ध इस मुद्दे को समझने का ज्ञान देते हैं जैसे कि संसार कैसे बना है, इसके मानव प्राणी होने का क्या अर्थ है और हमें दूसरों के साथ कैसा संबंध बनाना चाहिए।

जैसे ही हम इस ज्ञान को आत्मसात करते हैं, हमें अन्ततः आदर्श स्थिति का ज्ञान मिल जाना चाहिए, जो शाश्वत बुद्ध के साथ एक हो जाता है। यह अवस्था सामान्य लोगों के लिए समझ पाना कठिन है, और जाग्रत अवस्था तक पहुँचना असंभव होता है, जबतक कि हम स्वयं को संघ के धार्मिक अनुष्ठानों संलग्न नहीं रखते हैं।

इस जाग्रत अवस्था को प्राप्त करने के उपरान्त, वास्तविकता में लौट आना और जाग्रत अवस्था को जीवन में उतारना संभव हो जाता है। लेकिन जबतक कोई दूसरों के साथ संबंध नहीं बनाया जाता है, तबतक सभी मानव प्राणियों की रक्षा नहीं होगी और व्यक्ति विशेष की मुक्ति अधूरी रहेगी। यही कारण है कि परिवर्त 23 से 28 में धर्म देशना के समापन सत्र का स्थान गृधकूट पर्वत का शिखर है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.115-21.

स्वयं एवं दूसरों के लिए मुक्ति लाना

इस महिने, रिश्शो कोसेइ काइ संस्थापक निक्क्यो निवानो की जयंती मनाता है। इसके अतिरिक्त, संगठन के लिए नवम्बर माह महत्वपूर्ण है क्योंकि हम वर्ष भर की गतिविधियों पर विचार करना आरंभ करते हैं और नववर्ष की तैयारी में लग जाते हैं।

संस्थापक निवानो ने रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना "लोगों को दुः ख संताप से मुक्त कराने और संसार को बेहतर स्थान बनाने" के उद्देश्य से की थी। उन्होंने स्वयं को एवं दूसरों को मुक्त कराने वाली देशना में स्वयं को समर्पित रखा तथा लोक में शांति लाने में हमारी सहायता की।

इस महीने के संदेश में, प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त - 7 के "मायावी नगरी का दृष्टांत" के अंशों का उल्लेख किया है। वह हमें बताते हैं कि हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य हैं, जिनका बुद्ध की इन देशनाओं से सामना हुआ है, हमें धर्म देशना पर आधारित अपने प्रयासों के माध्यम से स्वयं को दुः ख दर्द से मुक्त कराने का हरदम प्रोत्साहन मिला है। पुनः बताते हैं कि हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम अपने दैनिक जीवन में जो कुछ करते हैं उसके प्रति सचेत रहें और अधिक से अधिक लोगों के साथ अच्छा संबंध बनायें जिससे कि, हम एक साथ मिलकर, मुक्ति प्राप्त कर सकें।

आइए, हम संस्थापक की अनुकम्पा का आदान प्रदान, इस अमूल्य देशना को आसपास के उनलोगों के साथ साझा करके करें जिनका इस देशना से सम्पर्क नहीं रहा है। हम स्वयं को इस देशना के अभ्यास में समर्पित करें जिससे हम उनमें खुशी लाने में मददगार हो सकें!

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

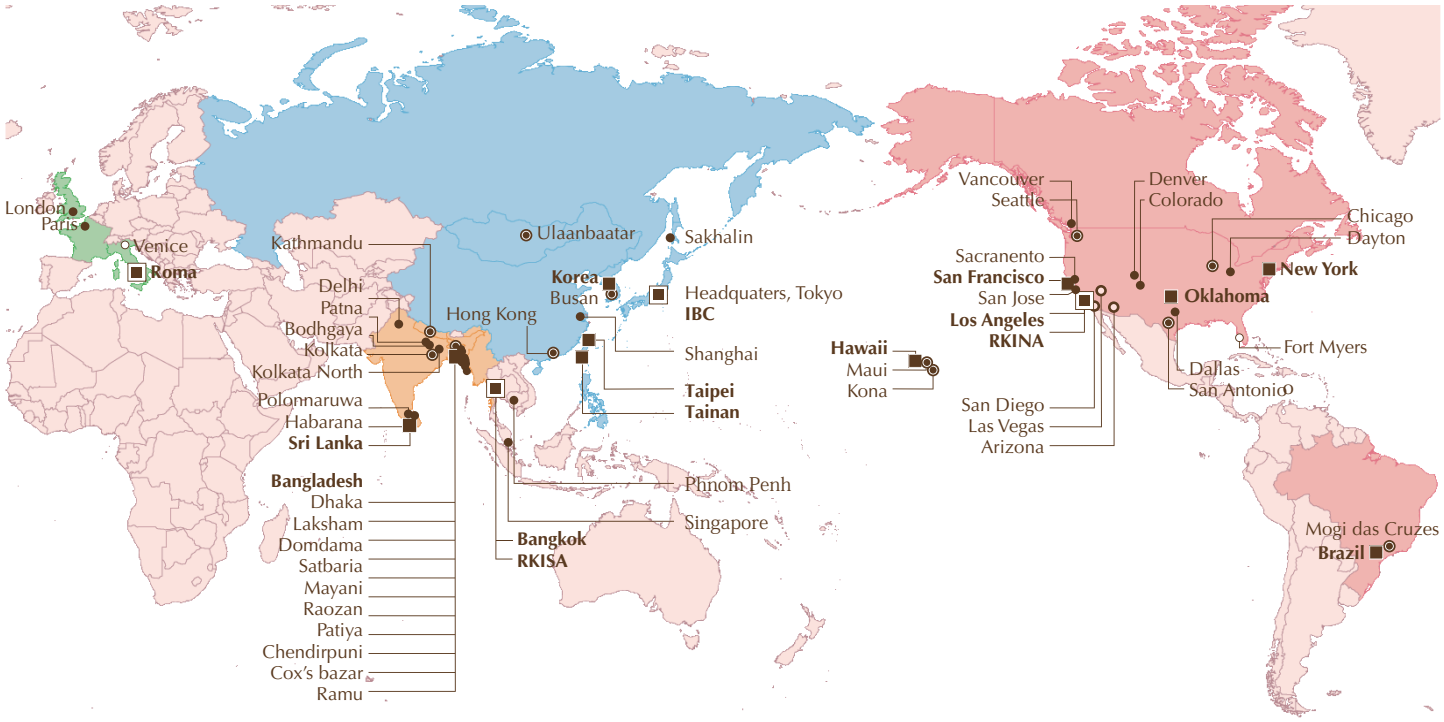

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212FAX: 1-808-455-4633
Email: info@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437
Email: info@rksf.org URL: http://www.rksf.org

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
Email: info@rkina.org URL: http://www.rkina.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

Facebook: https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil
Instagram: https://www.instagram.com/rkkbrasil

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓国立正佼成会
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會
台湾台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet
2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,
Orkhon province, Mongolia

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International